रेडियो वार्त्ता

'वार्त्ता' शब्द के अर्थ होला-बातचीत आ वृतांत। अंगरेजी में एकरा खातिर 'स्पोकेन वर्ड' चलेला। बाकिर आमतौर से वार्त्ता आ रेडियो वार्त्ता में फरक होला। रोजमर्रा के व्यवहार में होखे वाली वार्त्ता में दू चाहे दू से अधिक आदमी आपस में खाली बातचीत करेलन ज़बकि रेडियो वार्त्ता के एगो खास अर्थ होला। जब वक्ता रेडियो पर मानव समूह से अप्रत्यक्ष रूप से कवनो खास विषय पर बातचीत करेला त ओकरा के 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' में 'रेडियो वार्त्ता' कहल जाला। अंगरेजी में एकरा के 'रेडियो टॉक' आ वार्त्ताकार के 'रेडियो टॉकर' कहल जाला।

रेडियो वार्त्ता एगो खास वार्त्ताकार के जरिये प्रसारित कइल जाला। एकरा में श्रोता पक्ष का संवादी प्रवृत्ति के जिम्मेदारी वार्त्ताकारे के होला। मतलब अपना वार्त्ता में वार्त्ताकार ई समझ लेवे कि श्रोता ओकरा वार्त्ता के संगे आपन दिमाग जोड़ चुकल बा आ ओकरा अभिव्यक्तियन के साथे श्रोता सब के भाव-बोध जुड़ल होला। रेडियो वार्त्ता खातिर लिखल आलेख मुद्रण खातिर ना प्रसारण खातिर होला। एह से एकरा में श्रव्य रचना के सब गुण भइल जरूरी होला। वार्त्ता प्रसारित करे के समय वार्त्ताकार के सामने ओकर आलेख जरूर रहे के चाहीं। आलेख ना रहला पर वार्त्ताकार कुछ के कुछ बोल सकेलन। जवना से उनका साथे-साथे रेडियो कार्यक्रम भी दोषपूर्ण हो सकेला।

उत्तम रेडियो वार्त्ता खातिर वार्त्ता के विषय के चुनाव जरूरी होला। ओह विषय से जुड़ल हर तरह के जानकारी वार्त्ताकार रहे के चाहीं। एकरा संगही वार्त्ताकार के एह बात के ध्यान राखे के चाहीं कि एह वार्त्ता के सुननिहार के लोग बा। ताकि रेडियो नीति के ध्यान में राखत उ वार्त्ता के रोचक आ प्रभावी आलेख तइयार कर सकस। वार्त्ता के भाषा सहज, सरल आ स्वाभाविक सम्भाषण के भाषा होले। एकरा खातिर अइसन जीवंत शैली के अपेक्षा होले जवना के शब्द बोलत होखे, चित्र निर्माण करत होखे आ जवन श्रोता सब के अपना सुंदरता के प्रति खिंचाव पैदा ना क के अपना भीतर उफनत भाव विचार के प्रति खिंचाव पैदा करे। जवना वाक्यन में गति, प्रवाह, लयात्मकता आ जीवंतता होखे। रेडियो वार्त्ता चूकि एगो तय समय सीमा के भीतर प्रस्तुत होले। एह से वार्त्ताकार का वार्त्ता के आलेख ओही हिसाब से तइयार कर के प्रस्तुत करे के अभ्यास कर लेवे के चाहीं। उदाहरण खातिर आकाशवाणी पटना के भोजपुरी कार्यक्रम आरती से प्रसारित रेडियो वार्त्ता सुनल जा सकेला।

बोध प्रश्न

1. वार्त्ता के शाब्दिक अर्थ का होला।
2. आम-वार्त्ता आ रेडियो-वार्त्ता के फरक बताईं।
3. रेडियो-वार्त्ता के विशेषता बताईं।

समाचार लेखन

कवनो नया घटल घटना के आकर्षक ढंग से प्रकाशित चाहे प्रसारित करे के कला समाचार लेखन कला के अन्तर्गत आवेला। समाचार तइयार करेवाला का एह बात के ज्ञान होखे के चाहीं कि ई समाचार काहे खातिर आ केकरा खातिर तइयार हो रहल बा। समाचार में कवनो घटल नया घटना-दुरघटना के सिलसिलेवार ढंग से आकर्षक भाषा में उजागर कइल जाला ताकि प्रकाशित चाहे प्रसारित समाचार कि ओर पाठक, श्रोता चाहे दर्शक सहजे आकर्षित हो जास। विभिन्न स्रोतन से मिलल जानकारी के समाचार के रूप में ढालल समाचारलेखन कला के मूल लक्ष्य होला। जन समाचार पत्र खातिर निर्धारित नियम, पाठक-श्रोता के जरूरत आ समाज सहित देश दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डाले का खेयाल से तइयार कइल जाला। कवनो समाचार के मुख्य रूप से तीन गो भाग होला-शीर्षक, आमुख आ मूल कलेवर। शीर्षक मुद्दा के पाठक भा श्रोता के सोझा राखेला, ओकरा मुख्य मुद्दा के पाठक भा श्रोता के सोझा राखेला। समाचार के शीर्षक देत समय ध्यान राखे के चाहीं कि शीर्षक अइसन होखे जवना के देखते पाठक अथवा श्रोता में समाचार पढ़े आ सुने-देखे खातिर उत्सुकता बढ़ जाय। हर समाचार का प्रारंभ के तीन-चार पंक्ति समाचार के सारांश बतावेला। जवना में समाचार के मुख्य विषय-वस्तु-घटना आ प्रसंग के आकर्षक आ उत्सुकता

जगावेवाला उल्लेख होला। एकरे के समाचार के आमुख कहल जाला। मुख्य कलेवर समाचार के ऊ भाग होला जवन आमुख के बाद बिस्तार में लिखल भा बतावल जाला। एकरा में ऊ सब सूचना होला, जवना के समाचार पाठक आ सुननिहार लोग तकले पहुँचावे के होला।

समाचार लिखे का पहिले नीचे लिखल बातन में ध्यान दिहल समाचार लेखन कला के जरूरी शर्त्त बा-

(i) समाचार लेखन प्रारंभ करे से पहिले अपना तथ्यन के ठीक-ठीक जाँच कर लेवे के चाही आ जवना एजेन्सी से सूचना मिले, ओकर हवाला समाचार में देवे के चाहीं।

(ii) समाचार लिखे का पहिले महत्त्वहीन तथ्य आ सूचना के अलग कर देवे के चाहीं।

(iii) महत्त्वपूर्ण तथ्यन में तारतम्यता बइठा के साफ-साफ समाचार प्रस्तुत करे के चाहीं।

(iv) सउँसे समाचार के केन्द्रीय मुद्दा चाहे महत्वपूर्ण बात के चुन के आमुख के रूपमें लिखत, ओही से शीर्षक बनावे के चाहीं।

(v) समाचार के भाषा सुन्दर, आकर्षक आ सभका समझ में आ जाय वाला होखे के चाहीं।

(vi) समाचार के निष्पक्ष आ सकारात्मक प्रभाव वाला होखे के चहीं।

क्षेत्रीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर के समाचार के

कईगो प्रकार पावल जाला-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, व्यावसायिक, खेल-मनोरंजन से सम्बन्धित, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक वगैरह। एह सभ के कई एक उपप्रकार पावल जाला।

बोध प्रश्न

1. समाचार के परिभाषा दीं।
2. समाचार के कय गो भाग होला।
3. समाचार लेखन में कवना-कवना बात के ध्यान राखे के चाहीं।

पटकथा

पटकथा के मतलब होला–दृश्यक्रम के निर्धारण। एकरा के अंग्रेजी में **'स्क्रीन प्ले'** चाहे, सिनेरियो भी कहल जाला। एकर संबंध श्रव्य–दृश्य माध्यम दूरदर्शन चाहे सिनेमा से बा। कवनो कथा के घटना प्रसंग के रूप में क्रमवार जब दूरदर्शन चाहे सिनेमा के पट (स्क्रीन चाहे परदा) पर उतारल जाला त ओकरे के पटकथा कहल जाला। मनोहर श्याम जोशी अपना किताब "पटकथा लेखन : एक परिचय" में लिखले बाड़न कि "पटकथा कुछ आउर ना कैमरा से फिल्मा के परदा पर देखावे खातिर लिखाइल कथा ह।" अगर कहल जाय कि कथानक के अलग–अलग दृश्यन में तुड़ के प्रस्तुत कइल पटकथा ह त बेजाँय ना कहाई। पटकथा लेखन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के एगो अइसन विधा ह जवना में कहानियन के दृश्यन में बाँटे के होला। एकरा में दृश्यन के सिलसिला ओही तरह के होला जइसे उपन्यास में परिच्छेदन के होला। एह विद्या में जब घटना स्थल बदलेला उहवें दृश्यो बदल जाला।

पटकथा लेखन खातिर दृश्य ज्ञान भइल जरूरी होला। एकरा खातिर लेखक का फिल्म के लम्बाई, दृश्यन के संख्या, दृश्यन के क्रम निर्धारन, दृश्य के आदि आ अंत वगैरह के ज्ञान रहल जरूरी होला। पटकथा लिखे के पहिले घटना के अनिश्चित वर्तमान काल में घटे के कल्पना करत ओकरा के कागज पर शब्द के रूप देवे के चाहीं। एह बात

के ध्यान जरूर राखे के चाहीं कि दृश्य में अइसन कवन घटना लिहल जाय जवना से पात्रन का चरित्र के जानकारी मिल सके। लेखक के इहो जाने के चाही कि पात्र सब कवना मनः स्थिति आ परिस्थिति के वशीभूत होके काम कर रहल बाड़े आ का पावे के चाहत बाड़े।

पटकथा तीन अंकीय सूत्र पर आधारित होला। पहिलका अंक कथा -कथानक के गर्भ होला। एकरा में अइसन बात परोसे के चाही जवना से आगे चलके चरित्र-चित्रन नाटकीय मोड़ ले पावे। पात्रन के स्थिति-परिस्थिति आ इच्छा एही अंक में उजागर होला। आगे आवेवाली घटनन के नेवतल जाला। एकरा के संटप भी कहल जाला। दूसरका अंक में पात्रन के विशेष परिस्थिति में अलग-अलग इच्छा कामना के चलते भइल संघर्ष दिखावल जाला। कथानक के संवादन के जरिये उलझावल जाला ताकि ऊ चरमोत्कर्ष के ओर सहजे बढ़ सके। पात्रन के घात-प्रतिघात के वर्णन एह तरह से दिखावल जाला कि उन्हन के संकट के एहसास हो जाय। कहानी के विकास एही भाग में होला। एही से पटकथा के दुसरका भाग सबसे बड़ भाग कहाला। एकरा में एक घटना से दोसर घटना आ एक दृश्य से दोसर दृश्य पैदा होला। कथानक के कवनो अइसन दृश्य ना होखे जवन कथा के आगे बढ़े से रोके। पटकथा के तिसरका अंक संकट के समाधान के होला, आभास के होला। एह अंक में कथा खतम हो जाला। ई अंक लम्बा ना होके पहिलके अंक जइसन छोट होला। एक घंटा के फिल्म खातिर पटकथा के लगभग 100-120 पन्ना टंकित होखे के चाहीं। पहिला आ तिसरका अंक खातिर होखे के चाही 36-30 पन्ना। बाकिर पन्ना दोसरा अंक खातिर होखे चाहीं। तीनों अंकन का क्रम के ध्यान जरूर रखें के

चाहीं। पटकथा लिखे से पहिले कथानक विन्दु तय कर लेला से कथा निर्माण के दिशा मिल जाला। दर्शक के मन में जिज्ञासा ठीक से उठावत कथानक में नाटकीय तत्वन क होसला बढ़ावे के चाही। सेटप में इ बतावल जरूरी बा कि पात्र कहा बा? के बा? का करता? आ का चाहऽता?

फिल्म आ टेलीविजन के पटकथा लेखन में फरक होला। साहित्य से जुड़ल आदमी टेलीविजन लेखन में सक्षम होले जबकि फिल्म के संबंध में अइसन नइखे। फिल्म के पटकथा पूरा-पूरा व्यवसाय के ध्यान में राख के लिखाला जबकि टेलीविजन के पटकथा के संबंध में व्यवसाय के संगे-संगे विचार प्रधान होला। टेलीविजन में समय के आभाव होला। एकरा में नाटकीय संवाद के जरूरत होला। दृश्य के सिनेरियो में 3 स्थिति पैदा करे के होला जवना से संवाद में रोचकता बढ़े। जबकि फिल्मन में अइसन ना होखे। फिल्म लेखक का बृहद चिंतन के जरूरत होला। पटकथा एगो हुनर ह। आज फिल्म आ दूरदर्शन के प्रसार-विस्तार आउर पटकथा के लेखन में रोजगार के बढ़त सम्भावना के देखत आज के पीढ़ी पटकथा लेखन में रूचि ले रहल बा। भोजपुरियों में पटकथा लेखन के संभावना धीरे-धीरे बढ़ल जा रहल बा।

बोध प्रश्न

1. पटकथा का ह।
2. पटकथा लेखन का बाड़े में बताईं।
3. टेलीविजन आ फिल्म पटकथा लेखन में का अंतर बा।

अध्याय 21

भोजपुरी के मुहावरा

'मुहावरा' अरबी भाषा के शब्द ह जवना के अर्थ होला- बातचीत कइल भा उत्तर दीहल। संस्कृत वाङ्मय में 'मुहावरा' के समानार्थक कवनो शब्द नइखे। कुछ लोग एकरा खातिर 'प्रयुक्तता', 'वाग्रीति', 'वाग्धारा' भा 'भाषा-सम्प्रदाय' के प्रयोग करेला। वी०एस० आप्टे अपना 'इंगलिश-संस्कृत कोश' में मुहावरा के पर्यायवाची शब्दन में 'वाक्पद्धति', 'वाकरीति', 'वाक्-व्यवहार' आ 'विशिष्ट स्वरूप' लिखले बाड़न। पराड़कर जी 'वाक् सम्प्रदाय' के एकर पर्यायवाची मनले बाड़न। काका साहेब कालेलकर 'वाक्-प्रचार' के मुहावरा खातिर 'रूढ़ि' शब्द के सुझाव दीहले बाड़न। युनानी भाषा में 'मुहावरा' के 'ईडियोमा', फ्रेंच में 'इडियाटिस्मी' आ अंग्रेजी में 'इडियम' कहल जाला। 'भोजपुरी मुहावरा संग्रह' के भूमिका में हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के कथन बा कि "मोहाबरा (मुहावरा) में तीन गो शब्द बा- (मुँह+आव+रह) 'मुँह' के अर्थ 'मुख', 'आव' के अर्थ 'चमक' आ 'रह' के अर्थ 'रास्ता'। आने मुँह से निकलल चमकदार शब्द के 'मुहावरा' कहल जाला।" सहृदयके अनुसार 'मुहावरा' शब्द खातिर 'सिद्ध प्रयोग', 'परम्परा प्राप्त प्रयोग', 'साधु प्रयोग', 'वृद्धवाक् व्यवहार' आ 'व्यवहार सिद्ध प्रयोगे सटीक शब्द होलन स।

विद्वान लोग 'मुहावरा' के अपना-अपना ढंग से परिभाषित कहले स। हरिवंश राय शर्मा अपना 'मुहावरा कोश' के 'आमुख' में लिखले बाड़न कि मोट तौर पर हम कह सकिले कि जवना सुगठित शब्द समूह से लक्षणाजन्य कभी-कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलेला ओकरा के 'मुहावरा' कहल जाला। कभी-कभी ई व्यंग्यात्मक होलें।

मुहावरा के महत्व

मुहावरा के प्रयोग से भाषा चुस्त, सुदृढ़, गतिशील, रूचिकर, धारदार आ असरदार बन जाले। प्राय: मुहावरन में लक्षणा आ व्यंजना के प्रयोग निहित होला जवना चलते ओकरा प्रयोग से भाषा में प्रभावोत्पादकता आ चित्रमयता आ जाले, जइसे दाँत तले अंगुरी दबावल, रंगल सियार भइल, अपना गोड़ पर अपने कुल्हाड़ी मारल आदि। मुहावरन में कई प्रकार के अलंकार पावल जाला जवना चलते मुहावरन के प्रयोग से भाषा के सौंन्दर्य बढ़ जाला। भाषा में माधुर्य अउर ओज आ जाला। मुहावरन के सहायता से लेखक के 'गागर में सागर' भरे में सहायता मिलेला।

भोजपुरी के कुछ प्रमुख मुहावरा

1. **आग उगिलल**- कठोर बात बोलल
2. **अंगुरी पकड़ के पहुँचा पकड़ल**- थोड़ा आश्रय देला पर अधिकार जतावल
3. **अंगूठा देखावल**- धोखा दिहल, चिढ़ावल

4. **अंचरा पसारल**- दया के भीख **माँगल**
5. **अंट-शंट बकल**- ऊटपटांग बोलल
6. **आन्हर हाथ बटेर लागल**- संजोग से **अयोग्य के सफलता** मिलल।
7. **अकिल के पैदल**- मूर्ख
8. **अकिल ठिकाने लागल**- होश गुम भइल, गलती समझ में आइल।
9. **आपन माथ ओखरी में दिहल**- जानबूझ के खतरा मोलल
10. **अपना गोर पर खड़ा भइल**- स्वावलम्बी भइल
11. **आपना गोड़ पर कुल्हाड़ी मारल**- आपन हानि अपने कइल
12. **आँख के पानी गिरल/मरल**- बेलज्ज भइल
13. **आँख में गड़ल**- खटकल
14. **आँख चरबिआइल**- घमंडी बनल
15. **आँख लागल**- निन्द आइल
16. **आग में घीव डालल**- क्रोध भड़कावल
17. **आटा-दाल के भाव बुझाइल**- परिस्थिति के प्रतिकूलता के भान भइल
18. **इज्जत लिहल**- सम्मान नष्ट कइल
19. **उड़न-छू भइल**- गायब भइल।
20. **उधेड़बुन में पड़ल**- चिन्तित भइल
21. **उल्टा साँस चलल**- मरे का नियरा पहुँचल

22. **ऊसर में बीआ बोअल-** बेकार के काम कइल
23. **कटल-कटल दिखल-** अलग-थलग रहल
24. **कईची जइसन जबान चलल-** अमर्यादित बात बोलल
25. **करम फूटल-** अभागा, भाग्य बिगड़ल
26. **करेज छेदल-** मर्मस्पर्शी बात बोलल
27. **कसाई के खूँटा में बन्हाइल-** निर्दयी आदमी के हाथे दिहल
28. **कागज करिया कइल-** व्यर्थ में कुछ लिखल
29. **कान कइल-** ध्यान दिहल
30. **कान खड़ा भइल-** चौकन्ना भइल
31. **कान में तेल डाल के सुतल-** सुन के अनसुना कइल/लापरवाह भइल

बोध प्रश्न

1. **मुहावरा के परिभाषा दीं।**
2. **मुहावरा प्रयोग के महत्व बताईं।**
3. **नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ बताईं-**

   गुड़ गोबर कइल, लाल-पियर भइल, अगिआइल, तरवा के लहर कपारे चढ़ल, बकबास कइल।

4. **भोजपुरी के अपठित दस मुहावरन के लिख के ओकर अर्थ बताईं।**

भोजपुरी कहाउत आ लोकोक्ति

कहाउत चाहे लोकोक्ति अनुभवसिद्ध ज्ञान के भंडार ह। कहाउत के भोजपुरी में 'कहावत' भी कहल जाला। जवना के सम्बन्ध लोक प्रसिद्ध कवनो लोककथा से होला। भोजपुरी के प्राय: हर कहाउत चाहे लोकोक्ति पद्यमय पावल जाला जवन एक चरन चाहे दू चरन आ कबो-कबो दू चरन से ज्यादे के भी होला, जइसे-**'सात भईस के सात चभक्का, सोरह सेर घीव खाँउव रे, कहाँ गइले तोर बाघ मामा, एक टक्कर लड़ जाऊँ रे। अतिसय लोभ बकुलवे किन्हा, छन में प्रान कोंकड़वे लिन्हा'। 'अघाइल बकुला के पोठिया तीत, 'अकिल के पटपट ग्यान कहाँ पाइला, एही अकिल से रउआ कछुआ के खाईला' वगैरह।**

ई सभ भोजपुरी के कहाउत आ लोकोक्ति ह, जवना में कवनो ना कवनो कथा छिपल बा। जइसे 'अकिल के पटपट गेयान कहाँ पाईला, एही अकिल से रउआ कछुआ के खाईला', एकरा में एगो कछुआ के कथा बा। 'एक बेर एगो सियार कछुआ के खाये खातिर पकड़लस। कछुआ चट से आपन मुँड़ी अपना देही के खोल में ढुका लिहलस। सियार जब कछुआ के खाये लागल त ओकरा दाँत से कछुआ के उपरवारी हड्डीदार परत कटइबे ना करे तब सोचलस कि कछुआ सूख के चीमर हो गइल बा, एकरा के पानी में भिंजा के मोलायम बना लिहब तब खाइल जाई। उ कछुआ के ले जाके पोखरा के पानी में किनारहीं ध दिहलस, धरते कछुआ पानी में सरक

गइल आ पानी में जाके ऊ सियार के मूर्खता पर इहे कहावत कहलस। ई कहाउत कवनो मूर्ख व्यक्ति का मूर्खता पर कहल जाला। अइसही हरेक कहाउत के जड़ कवनो ना कवनो लोककथा से जुड़ल होला।

भोजपुरी के कुछ प्रमुख कहाउत आ लोकोक्ति

1. **आन्हर गोरइया, भरसाई में खोंता**- मूर्ख आदमी आपन नाश अपने करेला।
2. **गाय मार के जूता दान**- भारी अपराध कर के मामूली प्रायश्चित कइल।
3. **चलनी दूसे सूप के जेकरा सहस्सर छेद**- खुद गलती करे वाला जब दोसरा में गलती बतावेला तब ओकरा पर दोसरा के व्यंग्य।
4. **अन्हरन में काना राजा**- मूर्खन का बीच कम अकिल वाला के प्रधानता।
5. **अधजल गगरी छलकत जाय**- कम जानकार के अधिक बोलल।
6. **आपन हाथ जगरनाथ**- अपने आप पर भरोसा कहल।
7. **आम के आम, गुठली के दाम**- दुगुना फायदा उठावल।
8. **आगे नाथ ना पाछे पागहा**- जिम्मेवारहीन आदमी।

9. **एक पंथ, दू काज**- एके साथ दूगो काम के भइल।

10. **करिया अक्षर भईंस बराबर**- निपढ़-गँवार।

11. **गुरू गुड़ चेला चीनी**- गुरू के आगे चेला के बढ़ल।

12. **घर के भेदिया लंका दाहे**- आपसी फूट से हानि।

13. **देशी मुर्गी बिलायती बोल**- दोसरा के नकल में आपन असलियत भुलाइल।

14. **नौ के लकड़ी नब्बे खरच**- लाभ कम आ खर्च अधिक।

15. **सात चूहा खाके बिलाई भइली भगतिन**- पापी द्वारा पुण्यात्मा बने के ढोंग।

बोध प्रश्न

1. लोकोक्ति चाहे कहाउत के परिभाषा बताईं।

2. नीचे लिखल पाँच कहाउत के अर्थ बताईं-

माटी के चंदन घसे रघुनंदन, जहाँ गाछ ना बिरीछ उहाँ लेंड़ पुरधान, हाथी के दाँत भीतर न जात, आरसी ना फारसी मियाँ जी बनारसी, करनी ना धरनी धिया ओठ बिदरनी।

3. अपना गाँव के पुरनिया लोग से सुन के पच्चास गो कहाउतन के लिखीं आ ओकर अर्थ बताईं।



BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LIMITED, PATNA
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना